REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

रीवा राज्य के बघेली लोकोक्तियों का अध्ययन

राजकुमार तिवारी[1] , डॉ. देवाशीष बनर्जी[2]
[1]शोधार्थी संगीत, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष संगीत, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

बघेलखण्ड के घर–आँगन की बोली बघेली कही जाती है, जो रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर और उमरिया जिले में बोली जाती है। इस अंचल में बहुचर्चित बघेली लोकोक्तियों का एक विशाल वैभव है। ये लोक मानस की सहज उक्तियाँ ही नहीं, बल्कि अनुभूतियों से प्रस्फुटित सूत्र हैं। दैनिक बोलचाल की भाषा में लोकोक्तियों को ''उक्खान'' कहा जाता है। यही उक्खान बघेली लोकोक्ति, बघेली कहावतें और बघेली मुहावरे के नाम से जाने जाते हैं।

मुख्य शब्द – रीवा राज्य, बघेली लोकोक्तियाँ, बघेली कहावतें एवं बघेली मुहावरे।

प्रस्तावना –

लोकोक्तियों का जनजीवन से गहरा सम्बन्ध होता है। श्रीनिवास शुक्ल ''सरस'' के अनुसार बघेली लोकोक्तियों में अभिव्यक्त भावनाओं और अनुभूतियों में विविधता है। इनका एक विस्तृत संसार है। कुछ लोकोक्तियाँ रीति–नीति एवं रूढ़वादिता पर केन्द्रित हैं, तो कुछ आंचलिक साहित्य–संस्कृति एवं परम्परागत लोक साहित्य पर आधारित हैं। ये लोकोक्तियाँ व्यंग्यात्मकता और आदर्शवादिता से होते हुये खेती सम्बन्धी, जाति या वर्ग सम्बन्धी, धर्म एवं सम्प्रदाय सम्बन्धी, सामाजिक कुरीतियों तथा रूढ़ियों सम्बन्धी, नीति सूक्ति विषयक, आस्था और विश्वास सम्बन्धी तथा विकास एवं आलोचना सम्बन्धी यात्राएं पूर्ण करती है। कुछ उक्खान अविधा–व्यंजना पर आधारित हैं, तो कुछ लक्षणा की परिधि में सिमट कर अर्थ प्रदान करते हैं। कभी–कभी तो ये उक्खान रामचरित मानस की चौपाइयों की भाँति सार्थक सिद्ध होते हैं।

विश्लेषण –

बघेली उक्खान एकांगी नहीं हैं, ये एक साँचे विशेष में नहीं ढले हैं और न ही एक भाव पर केन्द्रित हैं, बल्कि ये इतने व्यापक हैं कि इनमें सांकेतिक अर्थवत्ता के गुण विद्यमान हैं। जो सीख देती हैं, उपदेश और आदर्शवादी शिक्षा प्रदान करती हैं, वे निम्नानुसार हैं–

1. तेरह कातिक तीन अषाढ़
2. जइसै हई अब तहसै रहती तब। काहे का जात कारी कामर काहे का वेर्रा सब।।
3. जेत्ती बड़ी पिछउरी होय ओत्तै पाँव पसारै।
4. माड़ी लेत पूजै न धोय–धोय तउलैं।

5. लाद दे लदाय दे चार कोस पहुंचाय दे।
6. कानी कुकुरिया लेह लगाइस गा पिलबा के माथे।

जिस लोकोक्तियों में एक ओर पीड़ा दूसरी ओर व्यंग्यात्मक भाव भरे हैं, उन उक्खानों की बानगी देखिये–

1. जे बियानी ते ललानी, परोसिन बबुआ लइ छहरानी।।
2. लागै न छागै रंग चोखै आबै।
3. जेखर रोटी ते वन–वन बागै, फकिरऊ ठोंक–ठोंक खाँय।
4. अंधे पोनैं कुत्ते खाँय, दुर–दुर करैं ता मारै जाँय।
5. सेंत केर चाउर मउसिया केर सराध।
6. ओइन गूना गोठैं ओइन गमनें जाँय।
7. नकटा केर नाक कटै अढ़ाई बीता रोज बढ़ै।।

मानवता, कर्तव्य बोध, कोरी कल्पना, जोखिम उठाना, दोहरे प्रयोजनों के भावों पर आधारित लोकोक्तियाँ उद्धृत हैं–

1. कोहू के घर जरै कोऊ देंह सेकैं।
2. टाठी न लोटा खाब दारै भात।
3. दमड़ी कै टोरिया टका भुइउनी।
4. लागी लाग त लागी नहीं भाँटा–रोटी बाढ़ी।
5. होइन नउआ नार होइन ठाकुर दुआर।
6. गिरब का गिरब दण्डवत का दण्डवत।

सामाजिक बुराईयों से बचने के लिये ''करेला नीम पर चढ़ा'' जैसे अर्थ देने वाले उक्खान साथ ही वेदना, दुर्भाग्य और आपत्तियों को रेखांकित करने वाले उक्खान की बानगी देखिये–

1. एक त ओइसौ गड़रिन दुसरे लहसुन खाये।
2. चलनी मां दूध दुहैं करम का दोख देंय।
3. अभागी के पतरी मां छेंदा।
4. करम रहा गड़िया राधीन खीर ता होइगै दरिया।
5. राजा नल का विपत्ति परी, भूँजी मछरी दह मां परी।

कबीर की तरह दो टूक बात कहने–सुनने के पयार्य में तथा असंभव को संभव बनाने को प्रयास में जिन लोकोक्तियों का प्रयोग होता है, वे निम्नलिखित हैं–

1. सच्ची बात सदुल्ले कहैं, सबके चित्त से उतरें रहैं।।
2. खर कहबइया डाढ़ी जार।
3. आपन दाम खोट त परोसी केर कउन दोख।
4. आपन टेटर न देखैं, आन के टेटर पर–पर झाँकै।
5. न नौ मन तेल होई न राधा नचिहैं।
6. घन घँसे न कुल्हरा होय।

तुलनात्मक भावों पर आधारित उपमाओं के रूप में प्रस्तुत होने वाले उक्खान और कोई किसी से कम नहीं की स्थिति प्रस्तुत करने वाले उक्खान, साथ ही थोथी प्रशंसा का मुखौटा उजागर करने वाले चंद लोकोक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

1. न राई बढ़ न सरसबा घट।
2. ओइन नागनाथ ओइन बकाईन नाथ।
3. जइसै रही दउरिया तइसै मिली बेसाह।
4. जइसै उदई तइसै भान, न इनखे चुँदई न उनखे कान।।
5. बड़ी बखरी के बड़े दुआर, आधा मूँदा आधा उधार।।
6. सान सांगन मां चलै, घीच घँसिलत चलै।।
7. राजन के घूड़े सूमन मा जोरे।।

अति संयोक्ति की स्थिति प्रदर्शित करने वाले और हास्य व्यंग्य पर आधारित कुछ उक्खानों की बानगी लीजिये–

1. नमाइन के तुपकदार मूड़े मां गोरसी।
2. सउखिन बुढ़िया चटाई के लहँगा।
3. रउसिन नाउन बाँस कै नहन्नी।
4. मेहरिया के धोती नहीं बिलारी के गाती बाँधैं।
5. छोटी मुँहिया बड़्डी बातें।
6. गोरइया बाबा पार लगाबा कहिन हमिन उतान।
7. बड़े–बड़े बहे जाँय जोरई कहैं पार लगाव।
8. रहैं बुसउला मां बात करैं दरबार के।
9. आँखी न कान कजरउता सोरह ठे।
10. पइसा न कउड़ी दात निपोरे दउड़ी

ग्रामीण जनजीवन से जुड़ी बघेली लोकोक्तियाँ जो कृषि कार्य पर केन्द्रित हैं, प्रकृति एवं वर्षा के भाव पर आधारित हैं, उनकी बानगी देखिये–

1. जोनरी जोतै तोर मरोर, तब डारै ऊ कुठिला फोर।।
2. तेरह कातिक तीन अषाढ़।
3. जेखर बना अषढ़बा तेखर बारौ मास।
5. पुरवा बुनर्बस बोबै धान, असलेखा जोनरी परमान।।
6. चित्रा गोहूँ अद्रा धान, न इनखा गेरूउ न उनखा धाम।।
7. सामन सुक्ता सत्तमी उअत जो देखै भान, की जल कुँइया मा मिलै की गंगा स्थान।।
8. हथिया पूँछ डोलाबै, घर बइठे गोहूँ आबै।
9. तड़कै मघा तड़किगा ऊसर, तब सुख मानैं काँडी मूसर।।

पशुओं के रूप रंग बनावट एवं उनके गुणों पर केन्द्रित बघेली उक्खानों का प्रमाण प्रस्तुत है–

1. सींग मुड़ी माथा मुड़ा मुँह का होबै गोल, चपल कान रोमा नरम अइसन बैल अमोल।।
2. बैल होय काजरा दाम देय आगरा।
3. पातुल पोड़री मोटी रान, पूँछ होय भुँइया तर्रान।।
4. करिया बरदा जेठ पूत, बड़े भाग से होय सपूत।।

मानवीय चरित्र एवं गुण की झाँकी सम्प्रस्तुत करने वाले कुछ उक्खान, इस प्रकार हैं–

1. आँधर के आँगे रोबै, आपन दीदा खोबै।।
2. केत्ता दाद केत्ता दाद के पाद।
3. आँधर का देखाबै कहै छः दाँत है।
4. अँधरा पादै बहिरा कहै जोहार।
5. पढ़े न लिखे नाम धराइन विद्यारथी।
6. जानै का सानैं का तरी घियै घिऊ।
7. नमाइन के गोह दिखिन, कहिन मउसी पलागो।।
8. पानी मां गोड़ न बोरैं, बड़का चिनगा मोरै आय।

समर्थ एवं शक्तिशाली लोग जिस काम को न कर पायें उस कार्य के लिये असक्षम व्यक्ति द्वारा घमण्ड के साथ डींग हाँकना, निरर्थक है, बस इन्हीं भावों पर केन्द्रित कुछ बघेली लोकोक्तियाँ उद्धृत हैं–

1. बीछी के मंत्र न जानैं साँप के बिल मां हाथ डारैं।
2. देबी फिरै बिपति के मारी पण्डा कहै कला देखाब।
3. छेरी केर परान जाय बिछबा कहै मजा नहीं।
4. गरे कढ़ी न जाय फुलउरी का हाँथ पसारै।
5. मुगउरा मुरै नहीं चबइना का मन करैं।

6. घर के महुआ बीन न जाय, बन के बिनैं मउहारै जाँय।।

कुछ बघेली लोकोक्तियाँ जो अपने आप में अकेली भावमयता देती हैं तथा अलग–अलग समय और संदर्भों से जुड़ी हैं, उन्हें देखिये–

1. सेबादी खबइया गर लगनी बइर।
2. मरी बछिया महाबाम्हन के नाव।
3. लिखी रहै कोदौं कै रोटी कउन खबाबै खीर।
4. एक बेर उँहकाये बामन बीर कहाये।
5. सँकरे परी बिलारी मुसऊ टेमैं कान।
6. मरत रहैं माँड़ का ठुनकै लागें भात का।
7. देसी घोड़ी मराठी भाषा।
8. साम्हू के मुँह कुकुर चाटै
9. निबला के मेहर सबकै भउजाई।
10. पढ़ाये पढ़ै न खूसर नबाये नबै न मूसर।
11. कबै बाबा मरिहैं कबै बैल बिकइहैं।
12. आखै बनिया कालै सेठ।
13. सास कै खिसिअउनी पतोहू के मूड़े।
14. कहाँ रहैं कहाँ देंह घँसैं।
15. बिना मनुस कै भइ उसनीद।
16. अइसन होती कातन हारी, काहे फिरतीं देंह उधारी।।
17. घर के लरिका गोही चाटैं, मामा खांय अमाबट।

इस तरह बघेली लोकोक्तियाँ अपने आप में गहरे भाव समेटे हैं। एक के पयार्य में दूसरे को रखना अथवा एक परिधि में उन्हें घेरना उचित नहीं है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः बघेली उक्खान साहित्य के लिये मंत्र नहीं तो रसायनशास्त्र के सूत्र अवश्य ही हैं। समग्रतः बघेली उक्खानों का अध्ययन एवं विवेचन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इनमें सूक्ष्म दृष्टि, सघन भाव और व्यावहारिक गुण क्रिया निहित हैं। इनका भाव–सौन्दर्य तब और चमत्कृत होता है जब इनका प्रयोग वाक्य में यथास्थान, यथासमय और यथासन्दर्भ में होता है।

संदर्भ –

1. डॉ. एस. अखिलेश – रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिकेशन्स, रीवा, संस्करण 2013,
2. रीवा राज्य का इतिहास, गायत्री पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, म.प्र. संस्करण 2006–07
3. मध्यप्रदेश संदेश, शासन का मासिक प्रकाशन, मार्च 2018, अंक 3, वर्ष 114
4. गुरुरामप्यारे अग्निहोत्री – रीवा राज्य का इतिहास, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद, भोपाल,